Series BRH/1

कोड नं.
Code No. 3/1/1

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

संकलित परीक्षा-II

SUMMATIVE ASSESSMENT-II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 80*

Time allowed : 3 hours] *[Maximum marks : 80*

निर्देश :

(i) *इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं - क, ख, ग और घ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।*

खण्ड – क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

भारत के ऋषि-मुनि जानते थे कि प्रकृति जीवन का स्रोत है और पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है। वे प्रकृति की दैवी शक्ति के रूप में उपासना करते थे और उसे 'परमेश्वरी' भी कहते थे। उन्होंने पर्यावरण पर बहुत गहरा चिंतन किया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर था उसे दैवी प्रवृत्ति माना।

भारत के पुराने ग्रंथों में वृक्षों और वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के रूप में किया गया है। उनको संतान की तरह पाला जाता था और हरे-भरे पेड़ों को अपने किसी स्वार्थ के लिए काटना पाप कहा जाता था। अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दण्ड का विधान भी था।

मनुष्य यह समझता है कि समस्त प्राकृतिक संपदा पर केवल उसी का आधिपत्य है। हम जैसा चाहें इसका उपभोग करें। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने इसका इस हद तक शोषण कर लिया है कि अब उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करो, अन्यथा मानव जाति नहीं बच पाएगी। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्व को 'तुलसी' और 'पीपल' के उदाहरणों से समझा जा सकता है। इन जीवनोपयोगी वृक्षों की देवी-देवता के समान ही पूजा की जाती है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष को परम रक्षक और मित्र बताया गया है। यह हमें अमृत प्रदान करता है, दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है, मरुस्थल का नियंत्रक होता है, नदियों की बाढ़ को रोकता है और जलवायु को स्वच्छ बनाता है। इसलिए हमें वृक्षमित्र होकर जीवन-यापन करना चाहिए।

(i) भारत के ऋषि-मुनियों के अनुसार जीवन की समृद्धि आधारित है:

(क) प्रकृति के संरक्षण पर

(ख) पर्यावरण की समृद्धि पर

(ग) अपार धन-संग्रह पर

(घ) असीमित ज्ञान-भण्डार पर

(ii) गद्यांश में 'आसुरी प्रवृत्ति' का आशय है:

(क) राक्षसी प्रवृत्ति (ख) मानवता की विनाशक प्रवृत्ति

(ग) पर्यावरण के लिए अहितकर प्रवृत्ति (घ) हानिकारक प्रवृत्ति

(iii) पर्यावरण प्रदूषण का कारण है कि मनुष्य:

(क) प्रकृति पर अपना एकाधिकार मानता है

(ख) प्रकृति के दोहन के लिए प्रयास करता है

(ग) जीवन की सुखमयता के लिए स्वार्थी हो जाता है

(घ) प्रकृति के संरक्षण का प्रयास नहीं करता

(iv) वृक्ष को सच्चा मित्र मानने का कारण नहीं है:

(क) छाया और फल देना

(ख) पर्यावरण को शुद्ध रखना

(ग) दूषित वायु को हटाकर प्राणवायु देना

(घ) मनुष्य को पवित्रता प्रदान करना

(v) तुलसी और पीपल का उदाहरण देकर लेखक क्या बताना चाहता है:

(क) ये वनस्पतियाँ रोग दूर करती हैं

(ख) उपयोगी वनस्पति को देवता माना जाता है

(ग) पीपल छायादार पेड़ है

(घ) इन्हें उजाड़ा नहीं जाना चाहिए

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: $1\times5=5$

प्रकृति ने मानव जीवन को बहुत सरल बनाया है, किन्तु आज का मानव अपने जीवन-काल में ही पूरी दुनिया की सुख-समृद्धि बटोर लेने के प्रयास में उसको जटिल बनाता जा रहा है। इस जटिलता के कारण संसार में धनी-निर्धन, सत्ताधीश-सत्ताच्युत, संतानवान-निस्संतान सभी सुख-शांति की चाह तो रखते हैं, किन्तु राह पकड़ते हैं आह भरने की। मरु-मरीचिका के

मैदान में जल की, धधकती आग में शीतलता की चाह रखते हैं। विद्वानों का विचार है कि संसार में सुख का मार्ग है – आत्मसंयम। किन्तु मानव इस मार्ग को भूलकर सांसारिक पदार्थों में, इन्द्रिय विषयों की प्राप्ति में आनंद ढूँढ रहा है – परिणामत: दुख के सागर में डूबता जा रहा है। आत्मसंयम का मार्ग अपने में बहुत स्पष्ट है, उसकी उपादेयता किसी भी काल में कम नहीं होती। इन्द्रिय-विषयों का संयम ही आत्मसंयम है। भौतिक पदार्थों के प्रति इन्द्रियों का प्रबल आकर्षण मानवीय दुखों का मूल कारण माना गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव से यह आकर्षण तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा है। पर ऐसी स्थिति में याद रखना आवश्यक है कि ये भौतिक पदार्थ सुख तो दे सकते हैं, आनंद नहीं। आनंद का निर्झर तो आत्मसंयम से फूटता है। उसकी मिठास अनिर्वचनीय और अनुपम होती है। इस मिठास के सम्मुख धन-सम्पत्ति, सत्ता, सौन्दर्य का सुख, सागर के खारे पानी जैसा लगने लगता है।

(i) आज का आदमी जीवन को अधिक जटिल कैसे बना रहा है:

(क) सुख-शांति की प्राप्ति के प्रयास में

(ख) अपना यश फैलाने की कोशिश में

(ग) दुनिया की सुख-समृद्धि को बटोरने की कोशिश में

(घ) असीमित लालसाओं को पूरा करने की चाह में

(ii) 'मरु-मरीचिका के मैदान में जल की चाह' का अभिप्राय है:

(क) भौतिक पदार्थों में सुख-शांति प्राप्त करना

(ख) उपभोक्तावादी संस्कृति के वातावरण में वैराग्य की बातें करना

(ग) धधकती आग में शीतलता की राह देखना

(घ) धनहीनता की दुनिया में भोग-विलास के सपने सँजोना

(iii) 'आत्मसंयम' का तात्पर्य है:

(क) अपनी आत्मा पर नियंत्रण

(ख) अपनी भावनाओं का नियमन

(ग) अपने मन का वशीकरण

(घ) इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षण पर संयमन

(iv) गद्यांश के अनुसार भौतिक पदार्थ:

(क) सुख दे सकते हैं

(ख) आनंद दे सकते हैं

(ग) न सुख दे सकते हैं, न आनंद

(घ) सुख दे सकते हैं, आनंद नहीं

(v) 'जटिल' शब्द का अर्थ नहीं है:

(क) कठिन (ख) पेचीदा

(ग) उलझा हुआ (घ) मैला

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

हरी-हरी वह घास उगाती है
फसलों को लहलहाती है
फूलों में भरती रंग
पेड़ों को पाल-पोसकर ऊँचा करती
पत्ते-पत्ते में रहे ज़िन्दा हरापन
अपनी देह को खाद बनाती है
धरती – इसीलिए माँ कहलाती है।

पानी से सराबोर हैं सब
नदियाँ, पोखर, झरने और समन्दर
ज्वालामुखी हजारों फिर भी
सोते धरती के अन्दर !

जैसा सूरज तपता आसमान में
धरती के भीतर भी दहकता है
गोद में लेकिन सबको
साथ सुलाती है
धरती – इसीलिए माँ कहलाती है।

आग-पानी को सिखाती साथ रहना
हर बीज सीखता इस तरह उगना,

एक हाथ फसलें उगाकर
सबको खिलाती है
दूसरे हाथ सृजन का
सह-अस्तित्व का
एकता का पाठ पढ़ाती है
धरती – इसीलिए माँ कहलाती है।

(i) पत्ते-पत्ते को हरा-भरा बनाए रखने के लिए धरती:

(क) सूर्य से धूप लेती है

(ख) बादलों से सिंचाई करवाती है

(ग) अपनी देह को खाद बनाती है

(घ) सबके स्वास्थ्य का ध्यान रखती है

(ii) धरती माँ परस्पर विरोध-भाव रखने वालों को एक साथ रहना कैसे सिखाती है?

(क) नदियाँ, पोखर, सागर आदि के द्वारा

(ख) ज्वालामुखी के स्वभाव से गरमी कम करके

(ग) उन्हें पाल-पोस कर बड़ा बनाती है

(घ) विरोधियों को संतान के समान गोद में खिलाती है

(iii) धरती माँ सभी के लिए खाने की व्यवस्था कैसे करती है?

(क) खेतों को जोतने लायक बनाकर

(ख) फसलें उगाकर

(ग) अंदर-बाहर की गर्मी से

(घ) अपने देह की खाद से

(iv) कविता में 'सृजन' शब्द का आशय है:

(क) निर्माण (ख) संरचना

(ग) सृष्टि (घ) फसलें

(v) 'सूरज' का पर्यायवाची नहीं है:

(क) दिनकर (ख) दिवाकर

(ग) रत्नाकर (घ) प्रभाकर

4. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनंदन-
पाप-शाप सब शांत शमन कर, दर्प-द्वेष दुख-दैन्य हवन कर
शांति-त्याग सत-सुन्दर शिव की जले विश्व में जोत निरंतर
कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा हम करते अभिनंदन।
स्वर्ग बने मनुजों की संसृति और अखंडित हो यह संस्कृति,
सभी चढ़ें सोपान प्रगति के कहीं न हो जीवन की दुर्गति,
सब के सुख में व्यक्ति सुखी हो, कहीं न हो जन का दुख-क्रंदन
कोटि-कोटि उर-सुर से माता ! तेरा सब करते अभिनन्दन।

(i) कवि मातृभूमि से किसके विनाश की प्रार्थना कर रहा है?

(क) मद, मोह एवं लोभ।

(ख) गर्व, वैर एवं विषाद।

(ग) क्रोध, आवेश एवं आक्रोश।

(घ) पाखण्ड, झूठ एवं पाप।

(ii) कवि विश्व में किस ज्योति की कामना कर रहा है?

(क) ज्ञान और अध्यात्म की। (ख) तमनाशिनी प्रभा की।

(ग) सत्यं, शिवं, सुन्दरं की। (घ) मानसिक मलिनता के विनाश की।

(iii) 'संसार में कोई दुखी न हो' प्रार्थना का भाव किस पंक्ति में निहित है:

(क) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो'।

(ख) 'सभी चढ़ें सोपान प्रगति के'।

(ग) 'पाप-शाप सब शांत-शमन कर'।

(घ) 'कहीं न हो जन का दुख-क्रंदन'।

(iv) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो' – पंक्ति का आशय है:

(क) संसार में सभी प्राणी सुखी हों।

(ख) विश्व में मानवता की ज्योति जगे।

(ग) व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख में विकल हो जाए।

(घ) प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के सुख को अपना सुख माने।

(v) 'दर्प–द्वेष–दुख–दैन्य' में अलंकार है:

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) अनुप्रास

खण्ड – ख

5. (i) 'जो लोग पढ़ने के इच्छुक हैं, उन्हें यहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।' साधारण वाक्य में बदलिए: 1

(क) पढ़ने के इच्छुक लोगों को यहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

(ख) पढ़ाई करने वालों को यहाँ सभी सुविधाएँ मिलती हैं।

(ग) पढ़ाई करने वाले यहाँ सभी सुविधाएँ पा सकते हैं।

(घ) पढ़ने वाले यहाँ सभी सुविधाएँ पाते हैं।

(ii) संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए: 1

(क) तुम्हारा अभिमान गृहसुख का विनाश करेगा।

(ख) आप सब कुछ बोलिए किन्तु उसको भ्रष्ट मत कहिए।

(ग) वह ज्यों ही घर से निकला त्यों ही वर्षा होने लगी।

(घ) तुम जहाँ रहते हो, वहीं जाओ।

(iii) मिश्र वाक्य छाँटिए: 1

(क) तुम या तो मेरी बात मानो या यहाँ से चले जाओ।

(ख) यह पुस्तक लिखी है इसलिए पुरस्कार मिला है।

(ग) मेरी राय है कि सारी संस्थाएँ बंद कर देनी चाहिए।

(घ) बहुत प्रयासों के बाद उसको वह पुस्तक मिली।

(iv) 'उसकी दादी घर में आकर माँ से मिलकर चली गई।' – वाक्य का मिश्र वाक्य का रूप होगा: 1

(क) उसकी दादी घर में आई और माँ से मिलकर चली गई।

(ख) जैसे ही दादी घर में आई वैसे ही माँ से मिलकर चली गई।

(ग) दादी घर में आते ही माँ से मिली और चली गई।

(घ) दादी घर में आकर माँ से मिलकर चली गई।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के पद-परिचय के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए: 1×4=4

(i) उसका लख़नवी अंदाज लेखक को प्रभावित न कर सका।

(क) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ख) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(घ) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ii) उसने प्राकृतिक दृश्यों को देखा।

(क) अकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(ख) सकर्मक क्रिया, पूर्ण भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(घ) प्रेरणार्थक क्रिया, अपूर्ण भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(iii) 'उन्होंने खीरे को बड़ी नज़ाकत से बाहर फेंक दिया'।

(क) क्रियाविशेषण, कालवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(ख) क्रियाविशेषण, रीतिवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(ग) क्रियाविशेषण, स्थानवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(घ) क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(iv) तू यहाँ क्यों खड़ा है?

(क) सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(ख) निश्चयवाचक, सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, प्रथम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(घ) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

7. (i) भाववाच्य कहते हैं: 1

(क) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्ता होता है।

(ख) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्म होता है।

(ग) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय क्रिया होती है।

(घ) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्ता या कर्म से भिन्न होता है।

(ii) निम्नलिखित में कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए: 1

(क) उसकी धुआँधार तारीफ़ की गई।

(ख) बातचीत तो पिताजी ने शुरू की थी।

(ग) तुम्हारी बातें सुनी जाएँगी।

(घ) आइए, नहाया जाय।

(iii) निम्नलिखित में कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए: 1

(क) सुशीला ने योग्यता प्राप्त की।

(ख) मैं असहाय और असुरक्षित हो गया हूँ।

(ग) भरी सभा द्वारा तुम्हारी प्रशंसा की गई।

(घ) अब उससे चला नहीं जाता।

(iv) निम्नलिखित में भाववाच्य वाला वाक्य कौन सा है? 1

(क) छात्रों द्वारा जो प्रश्न उठाए गए थे उनका उत्तर दे दिया गया है

(ख) यहाँ इकट्ठा न हुआ जाय।

(ग) मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ाई कर ली है।

(घ) वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, पढ़ाते भी थे।

8. (i) 'छि: ! तुमने तो कुल पर कलंक लगा दिया'। रेखांकित शब्द है: 1

(क) अव्यय, विस्मयसूचक।

(ख) अव्यय, हर्षसूचक।

(ग) अव्यय, शोकसूचक।

(घ) अव्यय, घृणासूचक।

(ii) नीचे लिखे वाक्यों में भाववाच्य वाला वाक्य छाँटिए: 1

(क) उसकी आर्थिक स्थिति सिकुड़ रही है।

(ख) पुलिस द्वारा लाठी चलायी गयी।

(ग) आइए, पार्क में बैठा जाय।

(घ) आप पद का दुरुपयोग कर रहे हैं।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्रवाक्य छाँटिए: 1

(क) यह प्रश्न कठिन है किन्तु तुम्हें सरल लगता है।

(ख) वह दाता भी है और द्रष्टा भी है।

(ग) आप एक संवेदनशील नागरिक हैं।

(घ) लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है जिसको उसने भोगा है।

(iv) 'हमारे हरि हारिल की लकरी' में अलंकार है: 1

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) मानवीकरण (घ) अनुप्रास

9. (i) किस अलंकार में उपमेय की उपमान से समता की जाती है? 1

(क) श्लेष (ख) यमक

(ग) उपमा (घ) अनुप्रास

(ii) निम्नलिखित में उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण छाँटिए: 1

(क) कल्पलता-सी अतिशय कोमल।

(ख) कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।

(ग) चरणकमल बन्दौं हरिराई।

(घ) लम्बा होता ताड़ का वृक्ष मानो छूने अम्बर तल को

(iii) 'नयन तेरे मीन-से हैं' में उपमेय शब्द है: 1

(क) नयन

(ख) तेरे

(ग) मीन

(घ) से

(iv) निम्नलिखित में मानवीकरण अलंकार को पहचानिए: 1

(क) मृदुल मुकुल-सा मंजु मनोहर।

(ख) कोटि-कुलिस-सम वचन तुम्हारा।

(ग) भव-सागर में घूमता-फिरता हूँ स्वच्छन्द।

(घ) थकी सोयी है मेरी मौन-व्यथा।

खण्ड – ग

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबन्दी नहीं थी बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िन्दगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत 'पड़ौस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

(i) लेखिका के भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर के बाहर था, क्योंकि-

(क) उनकी गतिविधियाँ घर में सम्पन्न नहीं हो सकती थीं।

(ख) पतंग और गिल्ली-डंडा का खेल घर से बाहर का था।

(ग) घर से बाहर उनकी गतिविधियों पर कोई नियंत्रण नहीं था।

(घ) पारिवारिक परम्परा के अनुसार पुरुष को बाहर जाने की स्वतंत्रता थी।

(ii) लेखिका की सीमा घर ही क्यों थी?

(क) लड़कियाँ डरपोक स्वभाव के कारण घर की सीमा में ही रहती थीं।

(ख) घर से बाहर का वातावरण उनके लिए असुरक्षित था।

(ग) समाज में लड़कियों का बाहर जाना ठीक नहीं माना जाता था।

(घ) पारिवारिक परम्परा के अनुसार यही नियम था।

(iii) 'उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले में फैली रहती थीं' वाक्य का आशय है:

(क) घर और पड़ौसी के बीच में कोई विभाजक दीवार नहीं थी।

(ख) पूरा मोहल्ला एक-दूसरे के सुख-दुख का हिस्सेदार था।

(ग) आपसी प्रेमभाव के कारण पूरे मोहल्ले में पारिवारिक सम्बन्ध थे।

(घ) परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' पड़ौसी को भी परिवार का सदस्य मानती थी।

(iv) परम्परागत 'पड़ोसकल्चर' से विच्छिन्न होने का परिणाम है:

(क) हम फ्लैटों में रहने लगे हैं।

(ख) पारस्परिक प्रेमभाव क्षीण हो गया है।

(ग) सामाजिकता घट गई है।

(घ) हम असहाय, असुरक्षित और संकुचित हो गए हैं।

(v) 'हमने गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने का काम भी किया।' वाक्य का प्रकार है:

(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) दीर्घ वाक्य

अथवा

इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देनी चाहिए - घर में या स्कूल में - इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी

में आए सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कीजिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है - वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

(i) कुछ लोगों के अनुसार स्त्री शिक्षा के अनर्थकर होने का एक संभावित कारण है:

(क) शिक्षित स्त्री का स्वतंत्र होना।

(ख) शिक्षित स्त्री द्वारा पुरुष की बराबरी करना।

(ग) शिक्षित स्त्री द्वारा परिवार की उपेक्षा करना।

(घ) वर्तमान शिक्षा प्रणाली।

(ii) यदि देश की शिक्षा-प्रणाली अच्छी न हो तो हमें:

(क) स्त्रियों को पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए।

(ख) स्कूल-कॉलेजों को बंद कर देना चाहिए।

(ग) लड़कियों को घर पर ही पढ़ाना चाहिए।

(घ) शिक्षा-प्रणाली में बदलाव लाना चाहिए।

(iii) लेखक ने किसको 'सोलह आने मिथ्या' कहा है?

(क) स्कूल-कॉलेज की शिक्षा को।

(ख) शिक्षा प्रणाली के संशोधन को।

(ग) सुधारकों के प्रयासों को।

(घ) स्त्री-शिक्षा को अनर्थकर मानने को।

(iv) 'किसी ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ' - वाक्य का प्रकार है:

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य (घ) साधारण वाक्य

(v) 'सोलहों आने' मुहावरे का अर्थ है:

(क) एकदम खरा (ख) परम पवित्र

(ग) पूरी तरह (घ) प्रतिभायुक्त

11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए: 2×5=10

(क) आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

(ख) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा जाता है?

(ग) उत्तररामचरित, त्रिपिटक, गाथासप्तशती और सेतुबंध किस भाषा में रचे गए?

(घ) 'एक कहानी यह भी' की लेखिका के पिताजी के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ङ) 'परिमल' के विषय में चार पंक्तियाँ लिखिए।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया? 2

(ख) लक्ष्मण के व्यंग्यमय शब्दों से परशुराम के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषताएँ अभिव्यक्त हुई हैं? 2

(ग) परशुराम द्वारा गाली देना उनको शोभा क्यों नहीं देता ? 1

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

(क) माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए मना क्यों किया है? 1

(ख) 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं' आशय समझाइए। 2

(ग) स्त्री जीवन के बंधन किन्हें कहा है और क्यों? 2

13. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए:

(क) 'छाया मत छूना' कविता में दुख के कारण क्या बताए गए हैं? 2

(ख) बच्चे की दन्तुरित मुस्कान कवि के मन पर क्या प्रभाव छोड़ती है? 1

(ग) संगतकार किसे कहते हैं ? वह मुख्य गायक की किन-किन रूपों में मदद करता है? 2

14. 'मैं क्यों लिखता हूँ?' प्रश्न का लेखक ने क्या उत्तर दिया है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 5

अथवा

दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ?

खण्ड – घ

15. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर विचार-बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखिए: 5

(क) **बढ़ता हुआ यातायात**

• यातायात का जीवन में महत्व, • बढ़ते हुए साधन, • साधनों के प्रकार, • लाभ-हानि।

(ख) **अपनी भाषा**

• अपनी भाषा का महत्व, • सामाजिक व्यवहार में उसकी उपयोगिता, • अपनी भाषा की सेवा और विकास के उपाय।

16. प्राय: अस्वस्थ रहने वाली छोटी बहिन को पत्र लिखकर उसके स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे स्वस्थ रहने के कुछ उपयोगी सुझाव भी दीजिए। 5

अथवा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रकाशन विभाग के प्रबंधक को पत्र लिखकर उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बाज़ार में अनुपलब्धि के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।